बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

माँ

लेखक

क़ाज़ी नौशे रज़ा (रज़ा सिरसवी)

पुत्र जनाब क़ाज़ी रईसुल हसन

मोहल्ला चौधरियान, क़स्बा सिरसी सादात, ज़िला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

हिन्दी रूप

सय्यद अली कौसर जाफ़री

पुत्र जनाब सय्यद इश्तियाक़ हुसैन जाफ़री

प्रकाशक

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ-3

फ़ोनः 0522-2252230

मूल्यः 100

उन तमाम माओं की ख़िदमत में

जिनका दुनिया में कोई सहारा नहीं है।

'नूर' की अपनी बात

नूरे हिदायत फाउण्डेशन अपने प्रकाशन उठान (उड़ान) में यह छब्बीसवीं (26) कड़ी 'माँ' पेश करने का शगुन कर रहा है।

इस सुन्दर मनमोही महान कविता के महान कलाकार 'रज़ा' सिरसवी साहब के परिचय की ज़रूरत नहीं है। यह कविता इस से पहले कई बार छप कर हर आम ख़ास से प्यार और सराहना पा चुकी है। अब कुछ नये शेरों के साथ एक जग की माँग पर फिर पेश है।

आशा है हमारे योग्य पाठक इस महान अछूती शायरी को खुले मन से हाथों हाथ लेंगे और शायर के कमाल को दुआओं से और हमें दुआओं के साथ अपने सुझावों से निराश न करेंगे।

सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी
प्रभारी
नूरे हिदायत फाउण्डेशन
लखनऊ

दया की अवतार माँ के नाम

मु० र० आबिद

मेरे जानने और मानने की हदों में जनाब 'रज़ा' सिरसवी वह इकलौते शायर हैं जिनकी गर्व और गरिमा भरी पहचान सीधे 'माँ' से हुई है। प्रकृति की महान कलाकृति माँ पर महाकाव्य से न तो उन्हें, न माँ को किसी परिचय की ज़रूरत है कि मुझ जैसे कमदृष्टि अज्ञानी की नीरस लेखनी की ज़रूरत हो। फिर भी कुछ है कि न चाहते हुए भी आपकी पारखी दृष्टि पर बेकार बोझ बनने को बेबस हूँ। क्षमा चाहता हूँ।

माँ जब अपने भरपूर 'यौवन', वैभव और तेजा में (पूर्णमासी के चाँद समान) होती है, तो उसकी ठण्डी-ठण्डी चाँदनी की चमकती छटाओं की छाँव में हम संसार की सर्दी गर्मी से बचे तो रहते हैं, पर उसके व्यक्तव (ममता) की झलक भी महसूस कर पाने को हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ और बोध कब ठिकाने होते हैं, हमारी समझ घुटनियों भी कहाँ चल पाती है (यह तो बाद में दूसरों की ममता होती है जिसके दर्शन हमारे एहसास को झिंझोड़ते हैं, वह भी यदि हम कुछ समझ पायें तो...) अपने बोध की इसी बेबसी से हमें भगवान ही याद आता है कि बस.... बस यही कह पाते हैं (वह भी कुरआन पाक से कुछ सीख लेकर):-

'पालने वाले! उन पर ऐसी दया कर जैसे उन्होंने मुझे बचपन में पाला है।'

वास्तव में, 'जैसे पाला' को वही एक अकेला पालनहार देख समझ सकता है। यह तो हमारे बोध की सबसे बड़ी बेबसी होती है कि तब चकर-मकर करती हमारी आँखें तो होती हैं बल्कि पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का पूरा कमर कसा दलबल हमारी सेवा को होता है फिर भी हम देख कब पाते हैं,

समझ पाने की बात तो दूर रही। हो सकता है हमारी इस दयानीय दशा (दुर्दशा) के पीछे उसी का कोई दर्शन (सोच) हो!! माँ की महानता, महत्व और प्रताप के आगे हमारा बोध अपना सर क्यों उठाने पाये। कहीं हमारे अन्दर समय पर कृतज्ञता और धन्यभाव जग न पाने की हमारे सजग अन्तःकरण की कसक माँ के सामने हल्के से भी आँख उठाने के भारी अनादर पर लगाम लगाए रहें फिर यही बात हमारे अन्दर यह शिष्टभाव जगाए कि कहीं मामता के (तत्काल की 'अन्देखे सत्कारी चहीते) चमत्कारों को कुछ भी समझ सकें। यह कुछ भी हम ऐसे मंदबुद्धि (कहते हैं अभी तक हम 10% ही बुद्धि का इस्तेमाल कर पाये हैं) के लिए बहुत कुछ है, क्योंकि हम ममता की इस देवी को क्या समझ सकते हैं! फिर हम ममता के सिरजनहार अपने सच्चे पालनहार का ज्ञान क्या पा सकते हैं?

माँ के ललित कलाकार हमारे विद्वान कवि को भी शायद इसका एहसास है, तभी तो इस लोकप्रिय महान काव्य के कई एडिशन छपने के बाद भी उसमें शेर बढ़ाते जा रहे हैं यानी कविता अभी 'रचनाधीन' है। सच है, दया की अवतार करूणाधार माँ के अनन्त आयामों को घेरना हमारे सीमाबद्धता के सिमटे काव्य के बस में कहाँ!!

इस सराहनीय मोहनी उत्कृष्ट भावप्रधान कविता पर कुछ विचार रखने की मुझमें न तो योग्यता है न साहस (दुस्साहस)। काव्य की लोकप्रियता का नित बढ़ता हुआ ग्राफ़ ही इसे श्रद्धासुमन प्रस्तुत करने को काफ़ी है। बस एक बात कहता चलूँ। हमारी जब़ान का यह प्यारा (एक व्यन्जन एक स्वर का अनमोल मूल) शब्द जितना प्राकृतिक है उतना न कोई और शब्द है न किसी दूसरी भाषा का कोई भी शब्द क्योंकि हम सब की बोली इसी शब्द से फूटती है। हमें क्षमा करेंगे अरबी के विस्तार और सर्वागीणता के गीत गाने वाले उलमा, यूनानी भाषा को पेचीलेपन पर मदांघ सोफिस्ताई (Sophisticates), फ़ारसी ज़बान

की पारसी (पहलवी) मिष्ठान के रसिक 'आग़ा' साहब, संस्कृत की ब्रम्हवाणी के संज्ञनी सर्वश्री और आधुनिक काल की अंग्रेज़ी की सटीकता पर सर धुनने वाले हैट्स डाऊन मिस्टर (जो अब साहब बहादुर नहीं रहे, न ही 'सर' रहे क्योंकि 'सर' थोपने वाले सारे 'सर' हमारे यहाँ से सरसरा गये), उम्म (अरबी), मीटर (यूनानी), मादर (फ़ारसी), मात्रम् (संस्कृत), मडर/Modor (पुरानी अंग्रेज़ी) और मदर/Mother (नई अंग्रेज़ी) में वह बात कहाँ। इसी लिए माँ पर कुछ कहने का पूरा-पूरा हक़ प्राकृतिक रूप से उसी ज़बान बोली के शायर को जाता है जिस बोली ने यह प्यारा; न्यारा, प्यार भरा प्राकृतिक शब्द संसार को प्रदान किया है। फिर शायर भी वह जो कुल से 'क़ाज़ी' (न्यायधीश) हो, जन्म से 'नोशे' (दूल्हा - वह माँ ही होती है जो अपने हर बच्चे को दूल्हा मियाँ ही देखना चाहती है) और 'रज़ा' (भगवान की चाह) हों (यह काव्य अपने ढंग और विषय में पूरी तरह ईश्वर चहीता है)।

वह हज़ारों लाखों बधाइयों के पात्र हैं कि इस अछूते, प्राकृतिक विषय को चुना। उनकी इस पुण्याधार कल्पना को कोटि-कोटि नमन...

वैसे मैं मानता हूँ कि 'रज़ा' की इस मोहन, मर्मज्ञ, सरस, भाव विभोर महान काव्य पर कोई भी आँखें मूँदे या होंठ सिये न रहेगा। बस यह ध्यान रहे हमारा महान कवि वह है जो दूसरों के शेरों को असामान्य रूप से खुले मन से ऊँचे स्वर से सराहता और उठाता है (बल्कि नारे लगाता है)।

फिर इस सराहना के पहले और बाद में और इसके परदे में ममता के उस सिरजनहार और हमारे सच्चे पालनहार की सारी सराहना आराधना संस्तुति है जिसने ममता के रूप में हमें अपना इतना खुला अचूक करूणामय दर्शन दिया (जिससे बढ़कर सत्यदर्शी प्राकृतिक वस्तु की कल्पना हम कर नहीं सकते) और शायर को 'माँ' काव्य करने का वरदान!

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

माँ

मौत की आग़ोश में जब थक के सो जाती हैं माँ।
तब कहीं जाकर 'रज़ा' थोड़ा सुकूँ पाती है माँ।।
फ़िक्र में बच्चों की कुछ इस तरह घुल जाती है माँ।
नौजवाँ होते हुए बूढ़ी नज़र आती है माँ।।
रूह के रिश्तों की यह गहराईयाँ तो देखिये।
चोट लगती है हमारे और चिल्लाती है माँ।।
भूखा सोने ही नहीं देती यतीमों को कभी।
जाने किस-किस से कहाँ से माँग कर लाती है माँ।।
ज़िन्दगी की सिसकियाँ सुन कर, हवस के शहर से।
भूखे बच्चों की ग़िज़ा, अपना कफ़न लाती है माँ।।
हड्डियों का रस पिलाकर अपने दिल के चैन को।
कितनी ही रातों में ख़ाली पेट सो जाती है माँ।
ओढ़ती है हसरतों का ख़ुद तो बोसीदा कफ़न।
चाहतों का पैरहन बच्चे को पहनाती है माँ।।
दश्ते ग़ुर्बत में तयम्मुम करके ख़ाके सब्र पर।
ज़िन्दगी की लाश को ज़ख़्मों से कफ़नाती है माँ।
भूख से मजबूर होकर मेहमाँ के सामने।
माँगते हैं बच्चे जब रोटी तो शरमाती है माँ।।
जब खिलौने को मचलता है कोई ग़ुर्बत का फूल।
आँसुओं के साज़ पर बच्चे को बहलाती है माँ।।

मार देती है तमांचा गर कभी जज़्बात में।
चूमती है लब कभी गालों को सहलाती है माँ।।
मुफ़लिसी बच्चे की ज़िद पर जब उठा लेती है हाथ।
जैसे मुजरिम हो कोई इस तरह पछताती है माँ।।
कह तो देती है: यहाँ से दूर हो जा मर कहीं।
दोपहर के बाद दरवाज़े पा आ जाती है माँ।।
ग़मज़दा बच्चा नज़र आया तो ख़ुद ही दौड़ कर।
डाल कर बाँहें गले में घर में ले आती है माँ।।
भेजती है घर से जब स्कूल पहनाकर ड्रेस।
अपने ही बचपन की कुछ यादों में खो जाती है माँ।
आँसुओं की शक्ल में जलते हैं यादों के चिराग़।
एक माँ को आज ख़ुद अपनी ही याद आती है माँ।।
खेत पर बेटे को रोटी देने, घर से नंगे पाँव।
टेढ़े मेढ़े रास्तों पर चल के ख़ुद आती है माँ।।
छोड़कर हल बैल, धो के हाथ, छू के माँ के पैर।
रोटी जब खाता है बेटा, पंखा लहराती है माँ।।
शाम को बैल आएंगे भूखे तो उनके वास्ते।
सर पे रक्खे चारे की गठरी पलट आती है माँ।।
करके सानी और जला के घर में मिट्टी का दिया।
सामने हुक़्क़ा रखे बैठी नज़र आती है माँ।।
ख़ुद बख़ुद रोते हुए बच्चे को आ जाता है प्यार।
किस हसीं अन्दाज़ से बच्चे को धमकाती है माँ।।
दिल के सारे ज़ख़्म भर जाते हैं जब तन्हाई में।
उंगलियाँ बालों में करके सर को सहलाती है माँ।।

कर दिया मुश्किल से मुश्किल मरहला लम्हों में हल।
ज़िन्दगी की गुत्थियाँ कुछ ऐसे सुलझाती है माँ।।
जिनको फ़ुरसत ही नहीं उनकी ख़ुशी के वास्ते।
ज़िन्दगी में जाने कितनी बार मर जाती हैं माँ।।
नौ महीने पेट में रख कर पिला के ख़ूने दिल।
एक वजूदे मोतबर दुनिया को दे जाती है माँ।।
ऑपरेशन से वो दे के अपने बच्चे को हयात।
ज़िन्दगी भर के लिए बीमार हो जाती है माँ।।
क्या उतारेगा कोई बदला तेरे एहसान का।
पेट बच्चे के लिए ख़ुद अपना चिरवाती है माँ।।
दे के घुट्टी में मये हुब्बे अली[अ०] इश्क़े हुसैन[अ०]।
हर ज़माने के लिए मुख़्तार दे जाती है माँ।।
मारता है सर पे जो जूता यज़ीदे वक़्त के।
मुन्तज़र जैसा मुजाहिद हम को दे जाती है माँ।।
माँगती ही कुछ नहीं अपने लिए अल्लाह से।
अपने बच्चों के लिए हाथों को फैलाती है माँ।।
दे के एक बीमार बच्चे को दवाएं और दुआ।
पाँयती ही रख के सर पैरों पा सो जाती है माँ।।
बर्फ़ जैसी सर्द रातों में कभी यूँ भी हुआ।
बच्चा है सीने पे ख़ुद गीले में सो जाती है माँ।।
मेरे बच्चे की किसी सूरत बचा ले ज़िन्दगी।
डाक्टर से कह के ये पैरों पा गिर जाती है माँ।।
ज़िन्दगी बच्चे की ऐ मौला हवाले है तेरे।
चूम कर चौखट अज़ाख़ाने की चिल्लाती है माँ।।

सदक़ए शब्बीर में बच्चा जो पाता है शिफ़ा।
दे के नज़्रे पन्जतन बच्चों में बटवाती है माँ।।
होने ही देती नहीं औलाद को एहसासे ग़म।
हंसते-हंसते एक-एक आँसू को पी जाती है माँ।।
उसको एक मख़्सूस इल्मे ग़ैब देता है ख़ुदा।
देख कर बच्चे का चेहरा सब समझ जाती है माँ।।
बुझने देती ही नहीं है आरज़ुओं के चिराग़।
शमा की मानिन्द ख़ुद जल-जल के मर जाती है माँ।।
ऐसे-ऐसे इम्तहाँ ख़ुद मौत चीख़ उठ्ठे जहाँ।
मुसकुराकर ऐसी मंज़िल से गुज़र जाती है माँ।।
बेबसी शौहर की, बच्चों की ज़िदें, रस्मो रिवाज।
ज़िन्दगी के कितने तूफ़ानों से टकराती है माँ।।
एक तरफ़ शौहर की ग़ुरबत, एक तरफ़ बच्चों की ज़िद।
ले के एक तूफ़ान मेले से गुज़र जाती है माँ।।
दिल पकड़ लेती है, बच्चे और खिलौने देखकर।
बाद शादी के जो बेचारी न बन पाती है माँ।।
अपनी महबूबा की ख़ातिर जो निकाले माँ का दिल।
उसके हक़ में भी दुआए ख़ैर फ़रमाती है माँ।।
खा के ठोकर जब गिरा आई उसी दिल से सदा।
तुझको सीने से लगाने के लिए आती है माँ।।
अपना ही साया सिमट जाता है जब वक़्ते ज़वाल।
अब्रे रहमत बन के मेरे सर छा जाती है माँ।।
उम्र भर रोते हैं वो माँ की ज़ियारत के लिए।
जिनके आते ही जहाँ में ख़ुद चली जाती है माँ।।

ज़िन्दगी उनकी भटकती रूह की मानिन्द है।
उनको हर आँसू के क़तरे में नज़र आती है माँ।।
उम्र भर उनको सुकूने दिल कहीं मिलता नहीं।
देखकर औरों की माँएं उनको याद आती है माँ।।
बैठता हूँ रख के सर घुटनों में जब भी मैं उदास।
सर पे ममता का किये साया नज़र आती है माँ।।
भीगी आँखों से पढ़ो तो दिल को आता है सुकूँ।
क्या अजब ममता की इक तारीख़ दे जाती है माँ।।
हंसता ही रहता है बच्चों का गुलिस्ताने मुराद।
नेमतों के फूल हर मौसम को दे जाती है माँ।।
गर्मी और सर्दी से बच्चों को बचाने के लिए।
चाँद बनती है कभी ख़ुर्शीद बन जाती है माँ।।
ख़ाली रहता ही नहीं बच्चों का दामाने मुराद।
जितनी आ जाएं दुआएं उतनी भर जाती है माँ।।
ज़िन्दगी का लम्हा-लम्हा जिसमें आता है नज़र।
अपनी क़ुरबानी का वो आईना दे जाती है माँ।।
जो ज़बाँ पर भी न आए दिल में घुटकर रह गए।
ऐसे कुछ अरमान अपने साथ ले जाती है माँ।।
ज़िन्दगी भर बीनती है ख़ार राहे ज़ीस्त से।
जो न मुरझाएं कभी वह फूल दे जाती है माँ।।
आबरू के साथ कैसे पाले जाते हैं यतीम।
ख़ुद ग़रज़ वहशी अमीरों को यह बतलाती है माँ।।
जब कोई तक़रीब घर में होती है माँ के बग़ैर।
आँसुओं की पालकी में बैठ कर आती है माँ।।

ख़ानदानी अज़मतों का जिनसे होता ज़हूर।
ज़िन्दगी के वह अज़ीम आदाब सिखलाती है माँ।।
जो बिना नब्ज़ें छुए दिल का बता देती है हाल।
वो तबीबो आलिमो आरिफ़ नज़र आती है माँ।।
ख़ून से अपने मुनव्वर करके राहे इनक़ेलाब।
जुल्मतों में नूर की तनवीर फैलाती है माँ।।
सफ़हए हस्ती पा लिखती है उसूले ज़िन्दगी।
मकतबे ख़ैरुल बशर तब ही तो कहलाती है माँ।।
वाजेबुत ताज़ीम है बादे अइम्मा और रसूल[स०]।
अज़मतो में सानिये क़ुरआन कहलाती है माँ।।
अपने पाकीज़ा लहू से ग़ुस्ल देके क़ल्ब को।
धड़कनों पर कलम-ए-तौहीद लिख जाती है माँ।।
हर इबादत हर मोहब्बत में छिपी है इक ग़रज़।
बे ग़रज़ बे लौस हर ख़िदमत बजा लाती है माँ।।
इन्क़लाबे वक़्त की रग-रग में भर के ख़ूने दिल।
एक ज़िन्दा क़ौम की तारीख़ बन जाती है माँ।।
अब कभी तारीख़ उसको भूल सकती ही नहीं।
सुरख़ी-ए-अफ़सान-ए-ईसार बन जाती है माँ।।
गुलशने हस्ती में जाने रोज़ कितनी मरतबा।
फूल की मानिन्द खिलती और मुरझाती है माँ।।
गोद के पालों को अपने सरहदों पर भेज कर।
ज़िन्दगी अपनी वतन के नाम कर जाती है माँ।।
भूल जाते हैं शहीदों को जो यह कुरसी नशीं।
एक दिन फ़ुटपाथ पे फ़ाक़ों से मर जाती है माँ।।

या कभी सरकार करती है शहीदों पर करम।
क़ीमत अपने लाल की इक तमग़ा पा जाती है माँ।।
आती है लब्बैक की बाबे इजाबत से सदा।
जब दुआ के वास्ते हाथ अपने फ़ैलाती है माँ।।
हर तरफ़ ख़तरा ही ख़तरा हो तो अपने लाल को।
रख के इक सन्दूक़ में दरिया को सौंप आती है माँ।।
भूख जब बच्चों की आँखों से उड़ा देती है नींद।
रात भर क़िस्से कहानी कह के बहलाती है माँ।।
ऐसा भी होता है बच्चा बोझ लगता है उसे।
मग़रिबी फ़ैशन के जब साँचे में ढल जाती है माँ।।
बच्चा आया को दिया और ख़ुद क्लब को चल पड़ी।
हो गया बेटा जब आवारा तो पछताती है माँ।।
नौकरों की गोदियों में परवरिश जिनकी हुई।
ऐसे बच्चों की मोहब्बत को तरस जाती है माँ।।
दूसरी माँओं के बेटे क़त्ल हों तो ग़म नहीं।
अपना बेटा जेल भी जाए तो चिल्लाती है माँ।।
अपने बेटे को जो देती है फ़सादी तरबियत।
दामने तारीख़ पर वो दाग़ बन जाती है माँ।।
ऊँट पर बैठी हुई बच्चों का पीती है लहू।
हमको इक तारीख़ में ऐसी नज़र आती है माँ।।
नफ़्स पर शैतान ग़ालिब हो तो हक़ को छोड़कर।
भाई से भाई को लड़वा कर सुकूँ पाती है माँ।।
हालाँकि अपना कोई बच्चा टेरेसा का न था।
वो अमल उसने किया लाखों की कहलाती है माँ।।

हो गया मशहूर उसका नाम ही आख़िर मदर।
ख़िदमतें कर के ज़माने भर की बन जाती है माँ।।
कम से कम फ़ाक़ों से तो मिल जाए बच्चे को निजात।
जाके ख़ुद बाज़ार में बच्चे को बेच आती है माँ।।
क़ातिले इंसानियत शिम्रो यज़ीदो हुरमला।
पैदा करके ऐसे शैतानों को पछताती है माँ।।
पहला दहशतगर्द हो क़ाबील, या इस दौर के।
नाम सुन के ऐसे बदबख़्तों के शरमाती है माँ।।
जिसके टुकड़ों पर पले अहले मदीना मुद्दतों।
उसकी बेटी को हर एक फ़ाक़े पा याद आती है माँ।।
मरतबा माँ का है क्या पेशे ख़ुदा सब देख लें।
इसलिए फ़िरदौस से पोशाक मंगवाती है माँ।।
खाके ठोकर जब कभी आग़ोश का पाला गिरा।
या अली मौला मदद कहती हुई आती है माँ।।
जाने कैसा रब्त है माँ और अली के दरमियाँ।
या अली बच्चा पुकारे और आ जाती है माँ।।
दर नया दीवार में बनता है इस्तक़बाल को।
ख़ान-ए-काबा के जब नज़दीक आ जाती है माँ।।
हाले दिल जाकर सुना देता है मासूमा को वो।
जब किसी बच्चे को अपनी क़ुम में याद आती है माँ।।
जब लिपट के रौज़े की जाली से रोता है कोई।
ऐसा लगता है कि जैसे सर को सहलाती है माँ।।
ज़िन्दगानी के सफ़र में गर्दिशों की धूप में।
जब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ।।

जब परेशानी में धिर जाते हैं हम परदेस में।
याद आता है ख़ुदा या याद बस आती है माँ।।
सब की नज़रें जेब पर हैं, इक नज़र है पेट पर।
देखकर सूरत को हाले दिल समझ जाती है माँ।।
बाप और बच्चों में हो जाता है जब भी इख़्तिलाफ़।
किस तरफ़ जाए अजब उलझन में पड़ जाती है माँ।।
घर के आँगन में जो हो जाती हैं दीवारें खड़ी।
कितने ही हिस्सों में सद अफ़सोस बट जाती है माँ।।
जिनको पाला था पराए घर पका कर रोटियाँ
उफ़! उन्हीं बच्चों पा इक दिन बोझ बन जाती है माँ।।
डिग्रियाँ दिलवाई जिनको अपने अरमाँ बेचकर।
अब उन्ही की बीबियों की झिड़कियाँ खाती है माँ।।
जब सुनाई देता है ऊँचा, नज़र आता है कम।
यासो हसरत की अजब तसवीर बन जाती है माँ।।
सब को देती है सुकूँ और खुद ग़मों की धूप में।
रफ़्ता-रफ़्ता बर्फ़ की सूरत पिघल जाती है माँ।।
कर ही देता है बुढ़ापा घर के कोने में असीर।
क़ैद में तन्हाई की आख़िर गुज़र जाती है माँ।।
ज़िन्दगी में क़द्र जो माँ-बाप की करते नहीं।
उम्र भर ऐसे ख़ताकारों को तड़पाती है माँ।।
चाहे हम ख़ुशियों में माँ को भूल जाएं दोस्तों।
जब मुसीबत सर पे पड़ती है तो याद आती है माँ।।
घेर ले चारों तरफ़ से जब मसाएब का हुजूम।
बाप के होते हुए भी हमको याद आती है माँ।।

जब भी आता है कोई दरपेश मुश्किल मरहला।
उसके हल के वास्ते बेटी को याद आती है माँ।।
मुल्क के दुश्मन सियासी भेड़िये फ़िरक़ापरस्त।
जब किसी रैली में आते हैं तो घबराती है माँ।।
शहर में बलवाई कर देते हैं जब बरपा फ़साद।
जब तलक बच्चा न घर आ जाए थर्राती है माँ।।
हल्क़ में अटका निवाला, आ गई बेटे की याद।
छोड़कर खाना अचानक भूखी उठ जाती है माँ।।
बहता है सड़कों के ऊपर बेगुनाहों का लहू।
गोलियों की सुनके आवाज़ें लरज़ जाती है माँ।।
आख़रश मजबूर हो के कर्फ़्यु को तोड़कर।
ज़ख़्मियों में ढूँढने बेटे को आ जाती है माँ।।
खाके गोली मर गया बेटा तो फिर सरकार से।
ज़िन्दगी भर का सिला एक चेक में पाती है माँ।।
याद आ जाते हैं बच्चे आग में जलते हुए।
जब कोई गुजरात कहता है तड़प जाती है माँ।।
क़ातिलों के हक़ में जब करता है मुन्सिफ़ फ़ैसला।
देख कर सुए फ़लक हसरत से रह जाती है माँ।।
तोड़कर मज़हब की दीवारों को मिलती है गले।
हाले ग़म अपना किसी माँ से जो दोहराती है माँ।।
एक-एक हमले से बच्चे को बचाने के लिए।
ढाल बनती है कभी तलवार बन जाती है माँ।।
सामने बच्चों के ख़ुश रहती है हर एक हाल में।
रात को छुप-छुप के लेकिन अश्क बरसाती है माँ।।

पहले बच्चों को खिलाती है सुकूनो चैन से।
बाद में जो कुछ बचे वो शौक़ से खाती है माँ।।
बातें करती है जो बच्चों को लिटाकर गोद में।
फूल से झड़ते हैं मुँह से ऐसे तुतलाती है माँ।।
झाँकता है होके ख़ुश बच्चा इधर गाहे उधर।
ओट में कूले की जब ''ता'' कहके छुप जाती है माँ।।
ज़लज़ला तबदील कर दे घर जो क़ब्रिस्तान में।
जान बच्चे की बचाकर ख़ुद चली जाती है माँ।।
ज़ख़्मी उंगली से पिलाकर बच्चे को अपना लहू।
ज़िन्दा रह जाता है बच्चा और मर जाती है माँ।।
फ़िक्र के शमशान में आख़िर चिताओं की तरह।
जैसे सूखी लकड़ियाँ इस तरह जल जाती है माँ।।
जाने अनजाने में हो जाए जो बच्चे से क़ुसूर।
एक अनजानी सज़ा के डर से थर्राती है माँ।।
कब ज़रूरत हो मेरे बच्चे को इतना सोच कर।
जागती रहती है ममता और सो जाती है माँ।।
जब खिलौने को मचलता है कोई ग़ुरबत का फूल।
आँसुओं के साज़ पर बच्चे को बहलाती है माँ।।
अपने सीने पर रखे है काएनाते ज़िन्दगी।
यह ज़मीं इस वास्ते ऐ दोस्त कहलाती है माँ।।
आबरू वहशी दरिन्दों से बचाने के लिए।
ज़ह्र बच्चों को खिलाके ख़ुद भी मर जाती है माँ।।
जब दया की भीक की उम्मीद भी जाती रहे।
अपने शौहर की चिता के साथ जल जाती है माँ।।

जुज़ ख़ुदा इस दर्द को कोई समझ सकता नहीं।
किस लिए आख़िर पति की भेंट चढ़ जाती है माँ।।
फ़लसफ़ी हैरान रह जाते है दानिश्वर ख़मोश।
ऐसी-ऐसी गुत्थियाँ लम्हों में सुलझाती है माँ।।
सुबह दरज़ी लाएगा कपड़े तुम्हारे वास्ते।
ईद की शब बच्चों को यह कह के बहलाती है माँ।।
बादे ग़ुरबत ज़िन्दगी में ऐशो इशरत जब मिले।
भूख के मारे हुए बच्चों को याद आती है माँ।।
कोई उस बच्चे से पूछे क्या है शादी का मज़ा।
बियाह की तारीख़ रख के जिस की मर जाती है माँ।।
घर से जब परदेस को जाता है गोदी का पला।
हाथ में क़ुरआँ लिए आँगन में आ जाती है माँ।।
देके बच्चे को ज़मानत में रज़ा-ए-पाक की।
पीछे-पीछे सर झुकाए दूर तक आती है माँ।।
काँपती आवाज़ से कहती है, बेटा! अलविदा।
सामना जब तक रहे हाथों को लहराती है माँ।।
रिसने लगता है पुराने ज़ख़्म से ताज़ा लहू।
हसरतो माज़ी की इक तसवीर बन जाती है माँ।।
दूर हो जाता है जब आँखों से यह नूरे नज़र।
दिल को हाथों से संभाले घर में आ जाती है माँ।।
दूसरे ही रोज़ से रहती है ख़त की मुन्तज़िर।
दर पे आहट हो हवा से भी तो आ जाती है माँ।।
हम बलाओं में कहीं घिर जाएं तो बे इख़्तियार।
ख़ैर हो बच्चे की या अल्लाह चिल्लाती है माँ।।

मसअला खाने का पेश आता है जब परदेस में।
ख़ुद बनाना पड़ता है तो और याद आती है माँ।।
जब परेशानी में घिर जाते हैं हम परदेस में।
ख़्वाब में देने तसल्ली हम को आ जाती है माँ।।
लौटकर वापस सफ़र से जब भी घर आते हैं हम।
डाल कर बाँहें गले में सर को सहलाती है माँ।।
ऐसा लगता है कि जैसे आ गए जन्नत में हम।
भीच कर बाहों में जब सीने से लिपटाती है माँ।।
देर हो जाती है घर आने में अक्सर जब हमें।
रेत पे मछली हो जैसे ऐसे घबराती है माँ।।
मरते दम बच्चे न आएं घर अगर परदेस से।
अपनी दोनों पुतलियाँ चौखट पा रख जी है माँ।।
उम्र भर रक्खे रही सर पर ज़रूरत का पहाड़।
थक गई साँसें तो अब आराम फ़रमाती है माँ।।
दर्द-आहें-सिसकियाँ-आँसु-जुदाई-इन्तेज़ार।
ज़िन्दगी में और क्या औलाद से पाती है माँ।।
आलमे गुरबत में माथे का पसीना पोछने।
मौत के आने से पहले ख़ुद चली जाती है माँ।।
जब परिन्दे लौट के जाते हैं घर सूरज ढले।
जैसे परदेसी को घर इस तरह याद आती है माँ।।
साय-ए-शफ़क़त, सुकूने दिल, लिबासे ज़िन्दगी।
आलमे ग़ुरबत में भी बच्चों को दे जाती है माँ।।
यूँ टपकती हैं दरो दीवार से वीरानियाँ।
जैसे सारी रौनक़ें हमराह ले जाती है माँ।।

ज़िन्दगी का लम्हा-लम्हा जिसमे आता है नज़र।
जाते-जाते ग़म का वो आईना दे जाती है माँ।।
मौसमों की क़ैद से आज़ाद यादों के गुलाब।
जो न मुरझाए कभी बच्चों को दे जाती है माँ।।
जब भी तनहाई में आता है मुझे माँ का ख़याल।
अश्के ग़म बन कर मेरी आँखों में आ जाती है माँ।।
हाथ उठा कर जब भी मैं कहता हूँ रब्बिर-हम-हु-मा।
आयते क़ुरआन में मुझको नज़र आती है माँ।।
प्यार कहते हैं किसे और मामता क्या चीज़ है।
कोई उन बच्चों से पूछे जिनकी मर जाती है माँ।।
शुक्रिया हो ही नही सकता कभी उसका अदा।
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।।
बाद मर जाने के फिर बेटे की ख़िदमत के लिए।
भेस बेटी का बदल के घर में आ जाती है माँ।।
जब जवाँ बेटी हो घर में और कोई रिश्ता न हो।
रोज़ इक एहसास की सूली पे चढ़ जाती है माँ।।
उम्र का सूरज ढला शादी न बेटी की हुई।
क़ब्र में यह दाग़ अपने साथ ले जाती है माँ।।
मिल गया तक़दीर से रिश्ता जो बेटी के लिए।
इस ख़ुशी में जाने कितने अश्क बरसाती है माँ।।
लेने आते हैं जो मौलाना इजाज़त अक़्द की।
घर में जाती है कभी आँगन में आ जाती है माँ।।
पोंछ कर आँसू दुपट्टे से छुपा कर दर्दे दिल।
ले के इक तूफ़ान बेटी के क़रीब आती है माँ।।

शोर होता है मुबारकबाद का जब हर तरफ़।
बेतहाशा शुक्र के सजदे में गिर जाती है माँ।।
बाज़ुओं में खिच के आ जाएगी जैसे कायनात।
ऐसे दुलहन के लिए बाँहों को फैलाती है माँ।।
चूम कर सर और कभी माथा कभी देकर दुआ।
कुछ उसूले ज़िन्दगी बेटी को समझाती है माँ।।
बैठकर डोली में बेटी तो चली सुसराल को।
देखती घर के दरो दीवार रह जाती है माँ।।
होते ही बेटी के रुख़सत मामता के जोश में।
अपनी बेटी की सहेली से लिपट जाती है माँ।।
रिस्ते-रिस्ते बनता है नासूर जब ज़ख़्मे जहेज़।
मार दी जाती है या तंग आ के मर जाती है माँ।।
करके शादी दूसरी हो जाए जो शौहर अलग।
ख़ूँ की इक-इक बूँद बच्चों को पिला जाती है माँ।।
माँ के मरते ही जो अब्बा दूसरी शादी करें।
ज़ुल्म पर सौतेली माँ के और याद आती है माँ।।
हाँ कोई सौतेली माँ गर ख़ादिमा ख़ुद को कहे।
हर अमल में उसके बच्चों को नज़र आती है माँ।।
छीन ले शौहर जो बच्चे दे के बीवी को तलाक़।
इक भिकारन बन के तन्हा घर में रह जाती है माँ।।
उम्र भर देती है बच्चों को ग़ुलामी का सबक़।
अपने बच्चों को वफ़ा के नाम कर जाती है माँ।।
रूह में पेवस्त करती है इताअत और वफ़ा।
बाज़ुओं पर ज़ैनबो शब्बीर लिख जाती है माँ।।

जब तलक यह हाथ है हमशीर बेपरदा न हो।
इक बहादुर बावफ़ा बेटे से फ़रमाती है माँ।।
करबला से जब सुनानी ले के आता है बशीर।
दोनों हाथों से कमर थामे हुए आती है माँ।।
चार बेटों की शहादत की ख़बर जिस दम सुनी।
अपने पाकीज़ा लहू पर फ़ख़्र फ़रमाती है माँ।।
आपकी अज़मत पे हो लाखों सलाम उम्मुल बनीन।
आपके किरदार को ख़ुश हो के अपनाती है माँ।।
एक ही घर है कनीज़ों ने जहाँ पाया शरफ़।
ख़ादिमा होते हुए भी फ़िज़्ज़ा कहलाती है माँ।।
साल भर में या कभी हफ़्ते में जुमेरात को।
ज़िन्दगी भर का सिला इक फ़ातेहा पाती है माँ।।
ज़ुल्म और दहशत से जो देती है नफ़रत का सबक़।
वह ग़मे शह की अमानतदार कहलाती है माँ।।
ख़त्म होता ही नहीं दिल से ग़मे करबोबला।
ग़म की ऐसी मुस्तक़िल जागीर दे जाती है माँ।।
जो अता करती है बच्चों को शऊरे इंक़लाब।
वो किताबे करबला हर रोज़ दोहराती है माँ।।
ज़िन्दगी दुश्वार कर देता है जब ज़ालिम समाज।
ज़हर बच्चों को पिलाकर ख़ुद भी मर जाती है माँ।।
ख़ुश रहे बेटा मेरा हर हाल में यह सोच कर।
अच्छी से अच्छी बहू ख़ुद ढूँढ कर लाती है माँ।।
छीन लेती है वही अकसर सुकूने ज़िन्दगी।
प्यार से दुल्हन बना के जिसको घर लाती है माँ।।

फ़ेर लेते हैं नज़र जिस वक़्त बेटे और बहू।
अजनबी अपने ही घर में हाय बन जाती है माँ।।
हम ने यह भी तो नही सोचा अलग होने के बाद।
जब दिया ही कुछ नहीं हमने तो क्या खाती है माँ।।
करके शादी छोड़ के घर जो रहे सुसराल में।
अपने उस बेटे की सूरत को तरस जाती है माँ।।
ज़ब्त तो देखो कि इतनी बेरुख़ी के बावजूद।
बद दुआ बेटे को देती है न पछताती है माँ।।
बेटा कितना ही बुरा हो पर पड़ोसी के हुज़ूर।
रोक कर जज़्बात फिर बेटे के गुन गाती है माँ।।
अल्लाह-अल्लाह भूल कर हर इक सितम को रात दिन।
पोता-पोती से शिकस्ता दिल को बहलाती है माँ।।
बा-वफ़ा ख़िदमत गुज़ार आ जाए जो घर में बहू।
सारा घर उसके हवाले कर सुकूँ पाती है माँ।।
नेक दिल दुल्हन भी है इक नेमते परवरदिगार।
शुक्र का हर रोज़ इक सजदा बजा लाती है माँ।।
ज़िन्दगी ऐसा तमाशा भी दिखाती है कहीं।
घर में आते ही बहू के ख़ुद चली जाती है माँ।।
शादियाँ कर करके बच्चे जा बसे परदेस में।
दिल ख़तों से और तसवीरों से बहलाती है माँ।।
गुमरही की गर्द जम जाए न मेरे चाँद पर।
बारिशे ईमान में यूँ रोज़ नहलाती है माँ।।
अपने पहलू में लिटा कर रोज़ तोते की तरह।
एक, बारह, पाँच, चौदह हमको रटाती है माँ।।

पूछते हैं क़ब्र के अन्दर वही मुनकिर नकीर।
गोद के पाले को जो बचपन में सिखलाती है माँ।।
अपनी इक उंगली उठाकर अर्शे आज़म की तरफ़।
एक है अल्लाह यह बच्चे को बतलाती है माँ।।
दिल पे रख कर हाथ कहती है यहाँ पर हैं अली[अ०]।
बाद में असमाए मासूमीन रटवाती है माँ।।
हुज्जतुल क़ायम[अ०] का नाम आते ही रख के सर पे हाथ।
अपने बच्चे से दुरूदे पाक पढ़वाती है माँ।।
चूम कर चौखट अज़ाख़ाने की कह के या हुसैन[अ०]।
बारगाहे इश्क़ के आदाब सिखलाती है माँ।।
जब तबर्रुक के लिए हो पाय ना कुछ भी नसीब।
नाम पर शब्बीर के बच्चे को बिकवाती है माँ।।
उम्र भर ग़ाफ़िल न होना मातमे शब्बीर से।
रात दिन अपने अमल से हमको समझाती है माँ।।
दौड़ कर बच्चे लिपट जाते हैं उस रुमाल से।
ले के मजलिस से तबर्रुक घर में जब आती है माँ।।
जाते-जाते भी अज़ादारी-ए-शाहे करबला।
जो मिली ज़ैनब से वो मीरास दे जाती है माँ।।
सबसे पहले जान देना फ़ातिमा[अ०] के लाल पर।
रात भर औनो मोहम्मद को यह समझाती है माँ।।
फ़ातिमा[अ०] के लाल पर क़ुरबान करने के लिए।
बाँध कर सर से कफ़न बच्चों को ले आती है माँ।।
उंगलियाँ बच्चों की थामे अपने भाई के हुज़ूर।
बहरे क़ुरबानी जिगर पारों को ले आती है माँ।।

दोपहर में अपना जो सब कुछ लुटा दे दीन पर।
वो बहादुर शेर दिल क़ौमों की कहलाती है माँ।।
फ़र्ज़ जब आवाज़ देता है तो आँसू पोंछ कर।
छोड़ कर लाशे सरे दरबार आ जाती है माँ।।
ज़ुल्म का सूरज जलाए जब शरीयत के गुलाब।
साया करने दीन पर अपनी रिदा लाती है माँ।।
जब रसन बस्ता गुज़रती है किसी बाज़ार से।
एक आवारा वतन बेटी को याद आती है माँ।।
अपने ख़ुतबों से जगा कर क़ौम का मुर्दा ज़मीर।
मौत बन के क़ातिलों के सर पे छा जाती है माँ।।
गुरबते सिब्ते पयम्बर जब न देखी जा सकी।
बाँध कर सेहरा जवाँ बेटे को ले आती है माँ।।
ख़ून में डूबे हुए आते हैं जब सेहरे के फूल।
इक-इक टुकड़े को अपने दिल से लिपटाती है माँ।।
लाशे क़ासिम पर कहा ज़िन्दा रही तो आऊँगी।
अब तो सूए शाम दुल्हन को लिये जाती है माँ।।
याद आता है शबे आशूर का कड़ियल जवाँ।
जब कभी उलझी हुई ज़ुल्फ़ों को सुलझाती है माँ।।
दौड़ता है बाप रन को सुनके बेटे की सदा।
थाम कर अपना कलेजा घर में रह जाती है माँ।।
किसने तोड़ी है दिले क़ुरआने नातिक़ में सिनाँ।
ज़ख़्मे नेज़ा देख कर सीने पा चिल्लाती है माँ।।
लाशे अकबर पर जवानी पढ़ रही है मरसिया।
शुक्र का सजदा इस आलम में बजा लाती है माँ।।

क़ासिदे सुग़रा खड़ा है कुछ तो दो बेटा जवाब।
रख के मुँह पे मुँह अली अकबर के चिल्लाती है माँ।।
अल्लाह-अल्लाह इत्तेहादे सब्र लैला और हुसैनअ०।
बाप ने खींची सिनाँ सीने को सहलाती है माँ।।
सामने आँखों के निकले गर जवाँ बेटे का दम।
ज़िन्दगी भर सर को दीवारों से टकराती है माँ।।
दिल से जाती ही नहीं है सुबहे आशूरा की याद।
जब अज़ाँ सुनती है हाय कर के रह जाती है माँ।।
मस्जिदों में नौजवाँ आते हैं जब सुनके अज़ाँ।
उनको देने को दुआएं हाथ फैलाती है माँ।।
यह बता सकती हैं बस हमको रबाबे ख़स्तातन।
किस तरह बिन दूध के बच्चे को बहलाती है माँ।
भेज कर तीरों में बच्चे को सुकूने क़ल्ब से।
फ़िर शहादत के लिए दामन को फैलाती है माँ।।
तीर खाकर मुस्कुराता है जो रन में बे ज़ुबाँ।
मरहबा सद मरहबा कहती नज़र आती है माँ।।
बेकसी ऐसी कि घर में बूँद भर पानी नहीं।
आँसुओं पर फ़ातेहा बच्चे की दिलवाती है माँ।।
क़ैदख़ाने में जो मर जाए कोई बच्ची यतीम।
बस ख़ुदा ही जानता है कैसे दफ़नाती है माँ।।
उसकी गुरबत पर दरो दीवार भी रोने लगे।
अधजले कुर्ते में जब बेटी को कफ़नाती है माँ।।
क़ाफ़ला चलने को है तैयार उठो घर चलो।
क़ब्र से लिपटी हुई बेटी की चिल्लाती है माँ।।

एक बच्चा करबला में, एक बच्ची शाम में।
गोद ख़ाली झूला ख़ाली ले के आ जाती है माँ।।
हाय असग़र, हाय तश्नालब सकीना या हुसैन[अ०]।
सामने आता है जब पानी तो चिल्लाती है माँ।।
पूछती है जब मेरे भैया को छोड़ आई कहाँ।
फ़ातिमा सुग़रा को ख़ाली गोद दिखलाती है माँ।।
ज़िन्दगी भर धूप में बैठी रहीं उम्मे रबाब।
धूप में ही एक दिन रो-रो के मर जाती है माँ।।
चैन से सोने नहीं देती कभी बच्चों की याद।
लेटते ही कुछ ख़याल आया तो उठ जाती है माँ।।
पी के पानी फिर ज़रा लेटी, अभी सोई ही थी।
क्या नज़र आया कि बिस्तर से उछल जाती है माँ।।
दिन तो जैसे भी बसर हो, हो ही जाता है मगर।
याद में बच्चों की रात आते ही खो जाती है माँ।।
सिलसिला यादों का आख़िर आँसुओं की शक्ल में।
इतना बढ़ता है कि इक दिन ग़र्क़ हो जाती है माँ।।
मौत आख़िर ख़त्म कर देती है यादों का सफ़र।
क़ब्र में लेकर ग़मों की भीड़ सो जाती है माँ।।
देखकर फूलों पे शबनम ऐसा लगता है हमें।
आज भी असग़र के गम़ में अश्क बरसाती है माँ।।
घर से दो बेटे तो कूफ़े को गए बाबा के साथ
और दो बच्चों को अपने करबला लाती है माँ।।
पूछती है जब रुक़ैया भाईयों का अपने हाल।
कुछ नहीं कहती ज़बाँ से अश्क बरसाती है माँ।।

साथ जो बाबा के थे कुछ भी नहीं उनकी ख़बर।
और दो बच्चों के अपने साथ सर लाती है माँ।।
बाप से बच्चे बिछड़ जाएं अगर परदेस में।
करबला से ढूँढने कूफ़े में ख़ुद आती है माँ।।
हारिसे मलऊन ने जब क़त्ल बच्चों को किया।
हाय माँ की इक सदा सुनकर तड़प जाती है माँ।।
दफ़्न दो कूफ़े में हैं दो करबला में बे-कफ़न।
दोनों हाथों से पकड़ कर कोख चिल्लाती है माँ।।
चार बेटे मर गए, शौहर का साया भी नहीं।
देखकर चारो तरफ़ बाँहों को फैलाती है माँ।।
कल जो बच्चों से भरा था हो गया ख़ाली वो घर।
हर दरो दीवार से मिल-मिल के चिल्लाती है माँ।।
झिलमिला के बुझ ही जाता है चिराग़े इन्तज़ार।
हैं जहाँ बच्चे वहीं पर ख़ुद चली जाती है माँ।।
करबला में यह ख़याल आख़िर ग़लत साबित हुआ।
हम समझते थे कि मर कर कुछ सुकूँ पाती है माँ।।
शिम्र के खंजर से या सूखे गले से पूछिये।
'माँ' इधर मुँह से निकलता है उधर आती है माँ।।
ऐसा लगता है किसी मक़तल से अब भी वक़्ते अस्र
इक बुरीदा सर से 'प्यासा हूँ' सदा आती है माँ।।
मौत की आग़ोश में भी कब सुकूँ पाती है माँ।
जब परेशानी में हों बच्चे तड़प जाती है माँ।।
जाते-जाते फिर गले बेटे से मिलने के लिए।
तोड़ कर बन्दे कफ़न बाँहों को फैलाती है माँ।।

जिसमें माँ सोती थी उस हुजरे को ख़ाली देखकर।
जैसे प्यासे को समन्दर ऐसे याद आती है माँ।।
अपने ग़म को भूल कर रोते हैं जो शब्बीर को।
उनके अश्कों के लिए जन्नत से आ जाती है माँ।।
जाने इन अश्कों से उसको किस बला का प्यार है।
लेके इक रूमाल हर मजलिस में आ जाती है माँ।।
करबला वालों के ज़ख़्मों पर लगाने के लिए।
जितने पाकीज़ा हैं आँसू सब को ले जाती है माँ।।
गोद का पाला मेरा तीरों पे है ठहरा हुआ।
'घर से ऐ ज़ैनब निकल', मक़तल में चिल्लाती है माँ।।
रन से जब आवाज़ देता है कोई तश्ना-दहन।
पकड़े हाथों से जिगर मक़तल में आ जाती है माँ।।
मैंने इसके वास्ते पीसी है बरसों चक्कियाँ।
छोड़ दे ज़ालिम मेरे बच्चे को चिल्लाती है माँ।।
क्या बिगाड़ा है मेरे बच्चे ने ऐ ज़ालिम तेरा।
चलती रहती है छुरी और तकती रह जाती है माँ।।
सर को नेज़े पर चढ़ा देते हैं जब अहले सितम।
जिस्म गोदी में रखे मक़तल में रह जाती है माँ।।
देखते ही देखते होता है इक ताज़ा सितम।
दौड़ते हैं लाश पर घोड़े तो चिल्लाती है माँ।।
'वा हुसैना' कहती सर को पीटती रोती हुई।
बेटियों को दे के लाशा खुद चली जाती है माँ।।
तज़किरा जब भी कहीं होता है उसके लाल का।
रोने वालों को दुआएं देने आ जाती है माँ।।

गर सुकूने ज़िन्दगी धिर जाए फ़ौजे जुल्म में।
बाल बिखराए हुए मक़तल में आ जाती है माँ।।
दे के अपने लाल को करबोबला की गोद में।
गोद ख़ाली फ़िर सुए जन्नत चली जाती है माँ।।
कल जो जंगल था, है उसकी ख़ाक अब ख़ाके शफ़ा।
झाड़ कर बालों से यह तासीर दे जाती है माँ।।
है ख़ुदा को अब वहाँ की ख़ाक पर सजदा क़ुबूल।
ख़ून से बेटे के इतना पाक कर जाती है माँ।।
जब परिन्दे लौट कर जाते हैं घर सूरज ढले।
करबला में सो गए जो उनको याद आती है माँ।।
घर में जब कोई ख़ुशी हो, रौशनी की शक्ल में।
देने बच्चों को दुआएं घर में आ जाती है माँ।।
दिल मचलता है जो उसकी याद में हद से सिवा।
जैसे बच्चे को खिलौना, ऐसे याद आती है माँ।।
ज़िन्दगी उनकी भटकती रूह की मानिन्द है।
उनको हर तसवीर में अपनी नज़र आती है माँ।।
जुज़ ग़मे शब्बीर मुमकिन ही नहीं जिसका इलाज।
अपनी फ़ुरक़त का एक ऐसा ज़ख़्म दे जाती है माँ।।
मेरे शौहर के गले में रीसमाँ डाली गई।
बादे पैग़म्बर हुए जो जुल्म गिनवाती है माँ।।

मसनदे इन्साफ़ पर है जलवागर नूरे ख़ुदा।
एक तरफ़ बैठे हुए हैं शाफ़ए रौज़े जज़ा।।
एक तरफ़ हैं शाफ़-ए-कौसर अली[अ०]-ए-मुरतज़ा।
मुन्तज़िर हैं सब नबी सुनने को रब का फैसला।।
आदमे[अ०] अव्वल से अब तक जितने भी पैदा हुए।
सब खड़े हैं हाथ में आमालनामे को लिए।।
हश्र के मैदाँ में सब के सब हैं घबराए हुए।
गरदनें नीचे किए मुजरिम से शरमाए हुए।।
हैं फ़रिश्ते गरदनों में तौक़ पहनाए हुए।
धूप की शिद्दत से हैं चेहरे भी मुरझाए हुए।
ऐसे सन्नाटे में जिब्रईल की गूँजी सदा।
आ रही हैं माँगने इंसाफ़ रब से फ़ातिमा।।

पसलियाँ पकड़े हुए रोज़े हिसाब आती है माँ।।
आज मुझको चाहिए इंसाफ़ चिल्लाती है माँ।।
अंबिया चिल्लाए सब उठ्ठो नज़र नीची करो।
हश्र के मैदान में शब्बीर की आती है माँ।।
एक कुर्ता ख़ूँ भरा और दो कटे बाज़ू लिए।
अश्क आँखों में भरे पेशे ख़ुदा आती है माँ।।
क्या बिगाड़ा था मेरी औलाद ने परवरदिगार।
अर्श का पाया पकड़ के ख़ूब चिल्लाती है माँ।।
मेरा दरवाज़ा जलाया हो गया मोहसिन[अ०] शहीद।
पसलियाँ टूटी हुई ख़ालिक़ को दिखलाती है माँ।।
यह मेरा बेटा हसन[अ०] जिसको दिया जहरे दग़ा।

कितने हैं टुकड़े कलेजे के यह गिनवाती है माँ।।
मैंने जिसके वास्ते पीसी थीं बरसों चक्कियाँ।
टुकड़े-टुकड़े लाश उस बेटे की दिखलाती है माँ।।
हाय यह मोहसिन है मेरा, यह हसन[अ०] है, यह हुसैन[अ०]।
अर्श हिल जाता है जब लाशों को दिखलाती है माँ।।
मेरे बेटे का गला काटा मेरी आग़ोश में।
ख़ून के धब्बे रिदा पे अपनी दिखलाती है माँ।।
हाय इस नाज़ुक बदन पे घोड़े दौड़ाए गए।
एक-इक टुकड़ा उठाकर दिल से लिपटाती है माँ।।
यह मेरे औनो मोहम्मद हैदरो जाफ़र की याद।
किस तरह मुरझाए हैं ये फूल दिखलाती है माँ।।
मेरे क़ासिम के बदन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।
ख़ून में डूबे हुए सेहरे को दिखलाती है माँ।।
यह मेरा ग़ाज़ी सकीना का चचा ज़ैनब की आस।
किस तरह काटे है इसके हाथ दिखलाती है माँ।।
अहले महशर चीख उठे हमशक्ले पैग़म्बर का जब
खोलकर सीना निशाँ बरछी का दिखलाती है माँ।।
देख कर असग़र का लाशा इक क़यामत आ गई।
तीन फल का तीर जब गर्दन में दिखलाती है माँ।।
देख यह डूबी हुई ख़ूँ में बहत्तर मय्यतें।
करबला की ख़ूँ भरी तसवीर दिखलाती है माँ।।
थोड़ा सा पानी पिला दे मेरे बेटे को कोई।
देख कर सूखे हुए लब अब भी चिल्लाती है माँ।।
हाय वो जलते हुए ख़ेमे में ग़श आबिद[अ०] मेरा।

कैसे लाई थी मेरी ज़ैनब यह बतलाती है माँ।।
यह मेरा सज्जाद[अ०] बीमारो ज़ईफ़ो नातवाँ।
पीठ पर उसकी निशाँ दुर्रों के दिखलाती है माँ।।
जाने कितनी दूर इस मज़लूम को खींचा गया।
पाँव में कुछ ख़ार और कुछ छाले दिखलाती है माँ।।
मारे गालों पर तमांचे, कानों से खींचे गुहर।
नीले-नीले गाल इक बच्ची के दिखलाती है माँ।।
बेटियों को मेरी नंगे सर फ़िराया दर बदर।
बाज़ुओं पे रस्सियों के नील दिखलाती है माँ।।
बाक़िरो जाफ़र इमामे मूसिये काज़िम, रज़ा।
दास्ताँ हर एक की महशर में दोहराती है माँ।।
यह तक़ी[अ०] है यह नक़ी[अ०] यह लाल मेरा असकरी।
सामरा मे क्या सितम ढाया है बतलाती है माँ।।
यह मेरा महदी जो सारी ज़िन्दगी रोता रहा।
उसके गालों पर निशाँ अश्कों के दिखलाती है माँ।।
हाय वह शामे ग़रीबाँ फूल सा नाजुक बदन।
घोड़ों से कुचली हुई लाशों को दिखलाती है माँ।।
सामने आते हैं जब शिम्रो यज़ीदो हुरमला
देखकर उन तीनों शैतानों को चिल्लाती है माँ।।
हैं यही ज़ालिम उजाड़ा है जिन्होंने मेरा घर।
मार कर एक चीख़ बस बेहोश हो जाती है माँ।।
अल-ग़यासो, अल-अमानो, अल-हफ़ीज़ो, अल-मदद।
सुन के बच्चों की सदायें होश में आती है माँ।।
डाल दो दोज़ख़ में जितने हैं अदू-ए-फ़ातेमा[स०]।

फ़ैसला अल्लाह का सुनकर सुकूँ पाती है माँ।।
जितने भी क़ातिल मिले क़ाबील से इस रोज़ तक।
आग के शोलों में हर ज़ालिम को जलवाती है माँ।।
बैठ जाती है दरे जन्नत पे ख़ुद ज़ैनब के साथ।
ख़ुल्द में पहले अज़ादारों को भिजवाती है माँ।।
दाख़िले फ़िरदौस हो जाते हैं जब अहले अज़ा।
तब कहीं जाकर 'रज़ा' थोड़ा सुकूँ पाती है माँ।।